6 पुत्री को पत्र

परिचयात्मक प्रश्न – हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री कौन थे?
– (पं. नेहरू का चित्र दिखाते हुए) बताइए ये कौन हैं?
प्रतिबिंब – बालकों को कर्तव्य, साहस और नेतृत्व के गुणों से परिचित करवाना।
परिकल्पना – क्या आप निडर और साहसी बनने का उपाय जानते हैं?

(यह पत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री (स्वर्गीय) जवाहरलाल नेहरू ने अपनी बेटी इंदिरा को उसके तेरहवें जन्मदिन के अवसर पर नैनी जेल, इलाहाबाद से लिखा था।)

नैनी जेल,
26 अक्तूबर 1930

प्रिय इंदिरा,

जन्मदिन पर तुम्हें कई उपहार मिलते रहे हैं। शुभकामनाएँ भी दी जाती रही हैं। पर मैं इस जेल में बैठा तुम्हें क्या उपहार भेज सकता हूँ। हाँ, मेरी शुभकामनाएँ सदा तुम्हारे साथ रहेंगी।

क्या तुम्हें याद है कि जॉन ऑफ आर्क की कहानी तुम्हें कितनी अच्छी लगी थी। तुम स्वयं भी तो उसी की तरह बनना चाहती थी। पर साधारण पुरुष तथा स्त्रियाँ इतने साहसी नहीं होते। वे तो अपने प्रतिदिन के कामों, बाल-बच्चों तथा घर की चिंताओं में ही फँसे रहते हैं। परंतु एक समय ऐसा आ जाता है कि किसी महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभी लोगों में असीम उत्साह भर जाता है। साधारण पुरुष वीर बन जाते हैं और स्त्रियाँ वीरांगनाएँ।

आजकल हमारे भारत के इतिहास का निर्माण हो रहा है। बापूजी ने भारतवासियों के दुःखों को दूर करने के लिए आंदोलन छेड़ा है। मैं और तुम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि यह आंदोलन हमारी आँखों के सामने हो रहा है और हम भी इसमें कुछ भाग ले रहे हैं। एक महान उद्देश्य हमारे सामने है और हमें इसकी पूर्ति के लिए बहुत कुछ करना है।

अब सोचना यह है कि इस महान आंदोलन में हमारा कर्तव्य क्या है, इसमें हम किस तरह भाग लें। परंतु जो कुछ भी हम करें, हमें इतना अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि उससे हमारे देश को हानि न पहुँचे। कई बार हम संदेह में पड़ जाते हैं कि हम क्या करें, क्या न करें। यह निश्चय करना कोई सरल कार्य नहीं है। जब भी तुम्हें ऐसा संदेह हो, तो ठीक बात का निश्चय करने के लिए मैं तुम्हें एक छोटा-सा उपाय बताता हूँ। तुम कोई भी काम ऐसा न करना जिसे दूसरों से छिपाने की इच्छा तुम्हारे मन में उठे। किसी बात को छिपाने की इच्छा तभी होती है, जब तुम कोई गलत काम करते हो। बहादुर बनो और सब कुछ स्वयं ठीक हो जाएगा। यदि तुम बहादुर बनोगी, तो तुम ऐसी कोई बात नहीं करोगी जिससे तुम्हें डरना पड़े या जिसे करने में तुम्हें लज्जित होना पड़े।

तुम्हें यह तो मालूम ही है कि बापूजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता का जो आंदोलन चलाया जा रहा है, उसमें छिपा रखने जैसी कोई बात नहीं है। हम तो सभी काम दिन के उजाले में करते हैं।

अच्छा बेटी! अब विदा।

भारत की सेवा के लिए तुम बहादुर सिपाही बनो,

यही मेरी शुभकामना है।

तुम्हारा पिता,

जवाहरलाल

शब्दार्थ

शुभकामना = किसी के भले की इच्छा करना। वीरांगना = वीर स्त्री। महान = बहुत बड़े। असीम = सीमा से अधिक, जिसकी सीमा न हो। साधारण = मामूली। निर्माण = रचना। लज्जित = शर्मिन्दा, शर्म आना। उद्देश्य = लक्ष्य, प्रयोजन। हानि = नुकसान। स्वर्गीय = जो स्वर्ग सिधार गया हो, मृत व्यक्ति के लिए संबोधन। पूर्ति = पूरा करना।

अभ्यास-कार्य

पाठ से

■ बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) सही विकल्प के सामने ✓ लगाइए:

1. प्रस्तुत पत्र लिखा गया है-
   (अ) नेहरू जी के आवास से
   (ब) नेहरू जी के कार्यालय से
   (स) नैनी जेल से ✓
2. प्रस्तुत पत्र का वर्ष है-
   (अ) सन् 1935 ई.
   (ब) सन् 1932 ई.
   (स) सन् 1930 ई. ✓
3. किसी महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सभी लोगों में -
   (अ) उत्साह भर जाता है
   (ब) असीम उत्साह भर जाता है ✓
   (स) चिंता भर जाती है
4. बहादुर बनो, और सब कुछ-
   (अ) निश्चित हो जाएगा
   (ब) स्वयं ठीक हो जाएगा ✓
   (स) कठिन हो जाएगा
5. नेहरू जी लिख रहे कि तुम बहादुर सिपाही बनो-
   (अ) अपनों की सेवा के लिए
   (ब) भारत की सेवा के लिए ✓
   (स) राज्यों की सेवा के लिए

(ग) रेखा खींचकर परस्पर संबद्ध वाक्यांशों का सुमेल कीजिए:

1. जन्मदिन पर तुम्हें	(अ) हमारे सामने है।
2. मेरी शुभकामनाएँ	(ब) भाग्यशाली हैं।
3. आजकल हमारे भारत के	(स) कई उपहार मिलते रहे हैं।
4. एक महान उद्देश्य	(द) सदा तुम्हारे साथ रहेंगी।
5. मैं और तुम बहुत ही	(य) इतिहास का निर्माण हो रहा है।

(ख) उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए:

1. तुम स्वयं भी तो जॉन ऑफ आर्क की तरह बनना चाहती थीं। (जॉन ऑफ आर्क/गाँधीजी)
2. बापू जी ने भारतवासियों के दुखों को दूर करने के लिए आंदोलन छेड़ा है। (अंग्रेजों/भारतवासियों)
3. हम भी उस आंदोलन में भाग ले रहे हैं। (युद्ध/आंदोलन)
4. एक महान उद्देश्य हमारे सामने है। (सामान्य/महान)

■ शुद्ध उच्चारण कीजिए:

लज्जित | उद्देश्य | जॉन ऑफ आर्क | भाग्यशाली | आंदोलन

■ इनके उत्तर लिखिए:

1. प्रस्तुत पत्र किसने, किसे और कहाँ से लिखा था?

प्रस्तुत पत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री (स्वर्गीय) जवाहरलाल नेहरू ने अपनी बेटी इंदिरा को उसके तेरहवें जन्मदिन के अवसर पर नैनी जेल, इलाहाबाद से लिखा था।

2. प्रस्तुत पत्र किस अवसर पर लिखा गया था?

प्रस्तुत पत्र इंदिरा के जन्मदिन के अवसर पर लिखा गया था।

3. पं० नेहरू ने अपनी बेटी को निडर व साहसी बनने का क्या उपाय बताया?

पं नेहरू ने अपनी बेटी को निडर और साहसी बनने के लिये कहा कि तुम कोई भी ऐसा काम न करना जिसे दूसरों से छिपाना पड़े।

4. पं० नेहरू ने जेल से अपनी बेटी के जन्मदिन पर क्या उपहार भेजा?

पं नेहरू ने जेल से अपनी बेटी के जन्मदिन पर उपहार के रूप में अपनी शुभकामनायें भेजी।

भाषा की बात

(क) इनके समानार्थी शब्द लिखिए:

1. सदा	हमेशा	2. प्रतिदिन	रोज	3. साधारण	मामूली
4. महान	बहुत बड़े	5. वीर	बहादुर	6. साहसी	हिम्मतवाला
7. निर्माण	रचना	8. स्मरण	याद	9. सरल	आसान

(ख) विलोम शब्द लिखिए:

1. महान	लघु	2. बहादुर	कायर	3. भाग्यशाली	बदनसीब
4. निश्चय	अनिश्चय	5. शुभ	अशुभ	6. सदा	कभी-कभी
7. निर्माण	विनाश	8. सरल	कठिन	9. उजाला	अंधेरा

(ग) कर्ता पद चुनकर लिखिए:

1. नेहरू जी ने इंदिरा को पत्र लिखा। — नेहरू
2. राजीव ने पुस्तक पढ़कर रख दी। — राजीव
3. तुम गाँव चले जाओ। — तुम
4. राजीव के पिताजी बाजार गए हैं। — राजीव
5. चाचाजी ने सब समाचार कह सुनाया। — चाचाजी

(घ) क्रिया पद चुनकर लिखिए:

1. बाहर मत जाओ। — जाओ (जाना)
2. भीतर बैठो। — बैठो (बैठना)
3. मुझे कहानी सुनाओ। — सुनाओ (सुनाना)
4. राजीव फल खा रहा है। — खा रहा (खाना)
5. वह हँस रहा है। — हँस (हंसना)

(ङ) इन वाक्यों की क्रियाओं का काल लिखिए:

1. वह बाजार गया। — भूतकाल
2. कल स्कूल खुलेगा। — भविष्यकाल
3. रेखा स्वेटर बुन रही है। — वर्तमान
4. तुम झूठ क्यों बोल रहे हो? — वर्तमान
5. उसने पत्र नहीं पढ़ा। — भूतकाल

(च) विशेषण चुनकर लिखिए:

1. चतुर लोमड़ी रोटी उठाकर भाग गई। — चतुर
2. लोभी बंदर पकड़ा गया। — लोभी
3. बहादुर लोग किसी को नहीं सताते। — बहादुर
4. सच्चा मित्र समय पर काम आता है। — सच्चा

कुछ करने की बात

(क) 'जॉन ऑफ आर्क' की कहानी मालूम कीजिए। इंदिरा को यह कहानी क्यों अच्छी लगी होगी?

(ख) अपने मित्र को पत्र लिखकर बताइए कि आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं?

(ग) नेहरू जी ने पत्र में लिखा है कि 'साधारण पुरुष वीर बन जाते हैं और स्त्रियाँ वीरांगनाएँ। यह कब और कैसे घटित होता है?

(घ) नेहरू जी ने पत्र में लिखा है कि 'तुम कोई ऐसा काम न करना जिसे दूसरों से छिपाने की जरूरत हो'। यह क्यों लिखा गया है?